



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

दैनिक भास्कर

18.01.23

3

3-6

कामयाबी • अंतरराष्ट्रीय संस्था ने बीमारी पर शोध रिपोर्ट को मान्यता दी, वीसी ने सराहा

एचएयू वैज्ञानिकों ने पहली बार खोजा ज्वार का नया रोग और इसका कारक

भारकर न्यूज़ | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई बीमारी व इसके कारक जीवाणु क्लेब्सिएला वरीकोला की खोज की है। वैश्विक स्तर पर पहली बार ज्वार फसल में इस तरह की बीमारी का पता चला है। विश्वविद्यालय के वीसी प्रो. बी.आर. काम्बोज के निदेशानुसार वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के कार्य शुरू कर दिए हैं व जल्द आनुवंशिक स्तर पर प्रतिरोध स्रोत को खोजने की कोशिश करेंगे। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बी.आर. काम्बोज ने वैज्ञानिकों की इस खोज के लिए बधाई दी। प्रो. काम्बोज ने कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की समय पर पहचान महत्वपूर्ण हो गई है। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल डोंगड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा व मीडिया एडवइजर डॉ. संदीप आर्य भी मौजूद थे। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वे जल्द इस दिशा में भी कामयाब होंगे।



एचएयू के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ज्वार की नई बीमारी की खोज करने वाले वैज्ञानिकों के साथ।

एचएयू वैज्ञानिक हैं पहले शोधकर्ता

पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी (ए.पी.एस.), यू.एस.ए. द्वारा प्रकाशित प्रतिष्ठित जर्नल प्लान्ट डिजीज में वैज्ञानिकों की इस नई बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में जर्नल में स्वीकार कर मान्यता दी है। अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी (ए.पी.एस.) पौधों की बीमारियों के अध्ययन के लिए सबसे पुराने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है जो विशेषतः पौधों की बीमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन करती है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने ज्वार में क्लेब्सिएला लीफ स्ट्रीक बीमारी पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया है।

इन वैज्ञानिकों का रहा योगदान

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि पहली बार खरीफ-2018 में ज्वार में नई तरह की बीमारी दिखाई देने पर वैज्ञानिकों ने तत्परता से काम किया। चार साल की मेहनत के बाद वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की खोज की है। वर्तमान समय में राज्य के मुख्यतः हिसार, रोहतक व महेन्द्रगढ़ में यह बीमारी देखने को मिली है। पादप रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. एच.एस. सहायण ने कहा कि बीमारी की जल्द पहचान से योजनाबद्ध प्रजनन कार्यक्रम विकसित करने में मदद मिलेगी। इस बीमारी के मुख्य शोधकर्ता और विश्वविद्यालय के प्लान्ट पैथोलॉजिस्ट डॉ. विनोद कुमार मलिक ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठन अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी, यू.एस.ए. द्वारा दिसंबर, 2022 के दौरान 'क्लेब्सिएला लीफ स्ट्रीक डिजीज ऑफ सोरगम' पर शोध रिपोर्ट को स्वीकार किया गया है। डॉ. मलिक ने कहा कि कई रूपात्मक, जैव रासायनिक, आणविक और रोगजनकता परीक्षणों के आधार पर हम यह साबित करने में कामयाब रहे कि एक जीवाणु क्लेब्सिएला वरीकोला इस बीमारी का कारक है। एचएयू के वैज्ञानिक डॉ. मनजीत चण्डेस, डॉ. पूजा संग्राम, डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. बजरंग लाल शर्मा, डॉ. पवित्रा कुमारी, डॉ. दलविंदर पाल सिंह, डॉ. सत्यवान आर्य और डॉ. नवजीत अहलावत ने भी इस शोधकार्य में योगदान दिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार, पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब कसरी	18-01-23	3	5-8

एच.ए.यू. वैज्ञानिकों ने खोजी ज्वार की नई बीमारी

वर्ष 2018 में ज्वार की फसल में
दिखाई दिए थे लक्षण

अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल
सोसाइटी ने दी बीमारी को मान्यता

हिसार, 17 जनवरी (राठी): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई बीमारी व इसके कारक जीवाणु क्लेबसिएला वैरीकोला की खोज की है। वैश्विक स्तर पर पहली बार ज्वार फसल में इस तरह की बीमारी का पता चला है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के निर्देशानुसार वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के कार्य शुरू कर दिए हैं व जल्द से जल्द आनुवांशिक स्तर पर प्रतिरोध स्रोत को खोजने की कोशिश करेंगे।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि पहली बार खरीफ-2018 में ज्वार में नई तरह की बीमारी दिखाई देने पर वैज्ञानिकों ने तत्परता से काम किया। चार साल की मेहनत के बाद वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की खोज की है। वर्तमान समय में राज्य के मुख्यतः हिसार, रोहतक व महेन्द्रगढ़ में यह बीमारी देखने को मिली है। पादप रोग विभाग के अध्यक्ष डा. एच.एस. सहारण ने कहा कि बीमारी



कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ज्वार की नई बीमारी की खोज करने वाले वैज्ञानिकों के साथ।

की जल्द पहचान से योजनाबद्ध प्रजनन कार्यक्रम विकसित करने में मदद मिलेगी। एच.ए.यू. के वैज्ञानिकों डॉ. मनजीत घणघस, डॉ. पूजा सांगवान, डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. बजरंग लाल शर्मा, डॉ. पवित्रा कुमारी, डॉ. दलविंदर पाल सिंह, डॉ. सत्यवान आर्य और डॉ. नवजीत अहलावत ने भी इस शोधकार्य में योगदान दिया।

इस बीमारी के मुख्य शोधकर्ता और विश्वविद्यालय के प्लांट पैथोलॉजिस्ट डॉ. विनोद कुमार मलिक ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठन अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी, यू.एस.ए. द्वारा दिसंबर, 2022 के दौरान 'क्लेबसिएला लीफ स्ट्रीक डिजीज ऑफ सोरगम' पर शोध रिपोर्ट को स्वीकार किया गया है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दुनिया में

इस बीमारी के सबसे पहले शोधकर्ता माने गए हैं।

डॉ. मलिक ने कहा कि कई रूपात्मक, जैव रासायनिक, आणविक और रोगजनकता परीक्षणों के आधार पर हम यह साबित करने में कामयाब रहे कि एक जीवाणु क्लेबसिएला वैरीकोला इस बीमारी का कारक है। यह रोग पत्तियों पर छोटी से लेकर लंबी लाल-भूरे रंग की धारियों के रूप में प्रकट होता है। समय के साथ, इन धारियों की संख्या में वृद्धि होती है जो बाद में नैक्रोटिक क्षेत्र में परिवर्तित हो जाते हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बी.आर. काम्बोज ने वैज्ञानिकों की इस खोज के लिए बधाई दी। प्रो. काम्बोज ने कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की

समय पर पहचान महत्वपूर्ण हो गई है। उन्होंने वैज्ञानिकों से बीमारी के आगे प्रसार पर कड़ी निगरानी रखने को कहा। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों को रोग नियंत्रण पर जल्द से जल्द काम शुरू करना चाहिए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	18-01-23	2	6-8

एचएयू के वैज्ञानिकों ने खोजी ज्वार की नई बीमारी अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसायटी ने दी बीमारी को मान्यता

माई सिटी रिपोर्ट

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई बीमारी व इसके कारक जीवाणु क्लेबिसिएला वरीकोला की खोज की है। वैश्विक स्तर पर पहली बार ज्वार फसल में इस तरह की बीमारी का पता चला है।

पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसायटी (एपीएस), यूएसए द्वारा प्रकाशित प्रतिष्ठित जर्नल प्लांट बीमारी में वैज्ञानिकों की इस नई बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में जर्नल में स्वीकार कर मान्यता दी है। एचएयू के कुलपति डॉ. बीआर कांबोज ने वैज्ञानिकों से बीमारी के आगे प्रसार पर कड़ी निगरानी रखने को कहा।

इस रोग नियंत्रण पर जल्द से जल्द काम शुरू करना चाहिए। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल डींगड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा व मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य भी मौजूद थे।



एचएयू के वैज्ञानिकों को ज्वार की फसल की नई बीमारी खोजने पर सम्मानित करते कुलपति प्रो. बीआर कांबोज। संजय

इन वैज्ञानिकों का रहा अहम योगदान

इस बीमारी के मुख्य शोधकर्ता और विश्वविद्यालय के प्लांट पैथोलॉजिस्ट डॉ. विनोद कुमार मलिक ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठन अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसायटी, यूएसए द्वारा दिसंबर, 2022 के दौरान 'क्लेबिसिएला लीफ स्ट्रीक डिजीज ऑफ सोरगम' पर शोध रिपोर्ट को स्वीकार किया गया है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी के सबसे पहले शोधकर्ता माने गए हैं। एचएयू के वैज्ञानिकों डॉ. मनजीत धणवस, डॉ. पूजा सांगवान, डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. बजरंग लाल शर्मा, डॉ. पवित्रा कुमारी, डॉ. दलथिंदर पाल सिंह, डॉ. सत्यवान आर्य और डॉ. नवजीत अहलावत ने शोध कार्य में योगदान दिया।

वर्ष 2018 में ज्वार की फसल में दिखाई दिए थे लक्षण : अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि पहली बार खरीफ-2018 में ज्वार में नई तरह की बीमारी दिखाई देने पर वैज्ञानिकों ने तत्परता से काम किया।

4 साल की मेहनत के बाद वैज्ञानिकों ने

इस बीमारी की खोज की है। वर्तमान समय में राज्य के मुख्यतः हिसार, रोहतक व महेंद्रगढ़ में यह बीमारी देखने को मिली है। पादप रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. एचएस सहारण ने कहा कि बीमारी की जल्द पहचान से योजनाबद्ध प्रजनन कार्यक्रम विकसित करने में मदद मिलेगी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उज्ज्वल समाचार	18-01-23	5	3-5

एचएयू वैज्ञानिकों ने पहली बार खोजी ज्वार की नई बीमारी

अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसायटी ने दी बीमारी को मान्यता

हिसार, 17 जनवरी (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई बीमारी व इसके कारक जीवाणु क्लेबसिएला वैरीकोला की खोज की है। वैश्विक स्तर पर पहली बार ज्वार फसल में इस तरह की बीमारी का पता चला है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के निर्देशानुसार वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के कार्य शुरू कर दिए हैं व जल्द से जल्द आनुवंशिक स्तर पर प्रतिरोध स्रोत को खोजने की कोशिश करेंगे। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वे जल्द ही इस दिशा में भी कामयाब होंगे। अंतरराष्ट्रीय संस्था ने दी बीमारी को मान्यता, एचएयू के वैज्ञानिक हैं पहले शोधकर्ता

पौधों में नई बीमारी को मान्यता

देने वाली अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी (ए.पी.एस.), यू.एस.ए. द्वारा प्रकाशित प्रतिष्ठित जर्नल प्लान्ट डिजीज में वैज्ञानिकों की इस नई बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में जर्नल में स्वीकार कर मान्यता दी है। अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी (ए.पी.एस.) पौधों की बीमारियों के अध्ययन के लिए सबसे पुराने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है जो विशेषतः पौधों की बिमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन करती है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने ज्वार में क्लेबसिएला लीफ स्ट्रीक बीमारी पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर

संस्था ने मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया है।

बीमारी के बाद इसके प्रसार की निगरानी व उचित प्रबंधन का हो लक्ष्य : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बी.आर. काम्बोज ने वैज्ञानिकों की इस खोज के लिए बधाई दी। प्रो. काम्बोज ने कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की समय पर पहचान महत्वपूर्ण हो गई है। उन्होंने वैज्ञानिकों से बीमारी के आगे प्रसार पर कड़ी निगरानी रखने को कहा। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों को रोग नियंत्रण पर जल्द से जल्द काम शुरू करना चाहिए। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा व मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य भी मौजूद थे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

सत्य कहे

दिनांक

18-01-23

पृष्ठ संख्या

3

कॉलम

4-8

अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी ने दी बीमारी को मान्यता

एचएएयू वैज्ञानिकों ने पहली बार खोजी ज्वार की नई बीमारी

सच कहें/मांगे लाल/सरदाना

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई बीमारी व इसके कारक जीवाणु क्लेबसिएला वीरीकोला की खोज की है। वैश्विक स्तर पर पहली बार ज्वार फसल में इस तरह की बीमारी का पता चला है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के निर्देशानुसार वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के कार्य शुरू कर दिए हैं व जल्द से जल्द आनुवंशिक स्तर पर प्रतिरोध स्रोत को खोजने की कोशिश करेंगे। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वे जल्द ही इस दिशा में भी कामयाब होंगे।

पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी (एपीएस), वृत्सए द्वारा प्रकाशित प्रतिष्ठित जर्नल फ्रॉन्ट डिजीज में



इन वैज्ञानिकों का रहा अहम योगदान

इस बीमारी के मुख्य शोधकर्ता और विश्वविद्यालय के फ्रॉन्ट पैथोलॉजिस्ट डॉ. विनोद कुमार मलिक ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठन अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी, वृत्सए द्वारा दिसंबर, 2022 के दौरान क्लेबसिएला लीफ स्ट्रीक डिजीज ऑफ सोरगम पर शोध रिपोर्ट को स्वीकार किया गया है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी के सबसे पहले शोधकर्ता माने गए हैं। डॉ. मलिक ने कहा कि कई रूपात्मक, जैव रासायनिक, आणविक और रोगजनकता परीक्षणों के आधार पर हम यह साबित करने में कामयाब रहे कि एक जीवाणु क्लेबसिएला वीरिकोला इस बीमारी का कारक है।

वैज्ञानिकों की इस नई बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में जर्नल में स्वीकार कर मान्यता दी है। अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी (एपीएस) पौधों की बीमारियों के अध्ययन के लिए सबसे

पुराने अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है जो विशेषतः पौधों की विमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन करती है।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी

निगरानी व उचित प्रबंधन का हो लक्ष्य: कंबोज

विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बी.आर. कंबोज ने वैज्ञानिकों की इस खोज के लिए बधाई दी। प्रो. कंबोज ने कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की समय पर पहचान महत्वपूर्ण हो गई है। उन्होंने वैज्ञानिकों से बीमारी के आगे प्रसार पर कड़ी निगरानी रखने को कहा। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों को रोग नियंत्रण पर जल्द से जल्द काम शुरू करना चाहिए। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल टीगड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा व मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य भी मौजूद थे।

वर्ष 2018 में ज्वार की फसल में दिखाई दिए थे लक्षण

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि पहली बार खरीफ-2018 में ज्वार में नई तरह की बीमारी दिखाई देने पर वैज्ञानिकों ने तत्परता से काम किया। चार साल की मेहनत के बाद वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की खोज की है। वर्तमान समय में राज्य के मुख्यतः हिसार, रोहतक व महेन्द्रगढ़ में यह बीमारी देखने को मिली है। पादप रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. एचएस सहारण ने कहा कि बीमारी की जल्द पहचान से योजनाबद्ध प्रजनन कार्यक्रम विकसित करने में मदद मिलेगी।

की खोज करने वाले सबसे पहले अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने ज्वार मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में प्रकाशन के लिए स्वीकार पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे किया है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दिन ५ दिवस	18-01-23	7	3-4

हकृवि के वैज्ञानिकों ने खोजी ज्वार की नयी बीमारी, अमेरिका ने दी मान्यता

हिसार, 17 जनवरी (निस)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने ज्वार की नयी बीमारी व इसके कारक जीवाणु क्लेबसिएला वैरीकोला की खोज की है। वैश्विक स्तर पर पहली बार ज्वार फसल में इस तरह की बीमारी का पता चला है। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के निर्देशानुसार वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के कार्य शुरू कर दिए हैं व जल्द से जल्द आनुवंशिक स्तर पर प्रतिरोध स्केत को खोजने की कोशिश करेंगे। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वे जल्द ही इस दिशा में भी कामयाब होंगे।

पौधों में नयी बीमारी को मान्यता देने वाली अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी (एपीएस), यूएसए द्वारा प्रकाशित प्रतिष्ठित जर्नल फ्लॉट हिजीज में वैज्ञानिकों की इस नयी बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में जर्नल में स्वीकार कर मान्यता दी है। अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी (एपीएस) पौधों की बीमारियों के अध्ययन के लिए सबसे

2018 में दिखे थे लक्षण

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि पहली बार 2018 में ज्वार में नयी तरह की बीमारी दिखाई देने पर वैज्ञानिकों ने काम किया। 4 साल की मेहनत के बाद वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की खोज की है। राज्य के मुख्यतः हिसार, रोहतक व महेन्द्रगढ़ में यह बीमारी देखने को मिली है। पादप रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. एचएस सहारण ने कहा कि बीमारी की जल्द पहचान से योजनाबद्ध प्रजनन कार्यक्रम विकसित करने में मदद मिलेगी।

पुराने अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है जो विशेषतः पौधों की बीमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन करती है।

प्रसार पर रखें कड़ी निगरानी :

प्रो. काम्बोज कुलपति डॉ. बीआर काम्बोज ने वैज्ञानिकों की बधाई दी। उन्होंने कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की समय पर पहचान महत्वपूर्ण हो गई है। उन्होंने वैज्ञानिकों से बीमारी के आगे प्रसार पर कड़ी निगरानी रखने को कहा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
इंडिया न्यूज	18.01.2023	--	--

एचएयू वैज्ञानिकों ने पहली बार खोजी ज्वार की नई बीमारी

▲ 18 JAN 2023



**अमेरिकन कन्वेंशनलैबोरेटॉरिकल सोसाइटी ने नई बीमारी को मान्यता
हिसार 1 जनवरी**

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई बीमारी से इसके कारणक जीवाणु कोनोस्पोरियम वेरीकोसम की खोज की है। वैश्विक स्तर पर पहली बार ज्वार फसल में इस तरह की बीमारी का पता चलता है। विश्वविद्यालय के कुलायुक्ति डॉ. बी.आर. काम्बोज के निर्देशानुसार वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के कार्य शुरू कर दिए हैं व जल्द से जल्द आनुवंशिक संशोधन पर प्रतिक्रिया करने का खोजने की कोशिश करेंगे। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि व जल्द ही इस रोग में भी कामयाब होंगे।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई बीमारी को मान्यता, एचएयू के वैज्ञानिक ने पहले सोधकर्म

पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अमेरिकन कन्वेंशनलैबोरेटॉरिकल सोसाइटी (ए.सी.एस. यू.एस.ए. द्वारा प्रकाशित ऑनलाइन जर्नल प्लांट डिजीज में वैज्ञानिकों की इस नई बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम सोध रिपोर्ट के रूप में जर्नल में स्वीकार कर मान्यता दी है। अमेरिकन कन्वेंशनलैबोरेटॉरिकल सोसाइटी (ए.सी.एस.) पौधों की बीमारियों के अध्ययन के लिए सबसे पहले अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलनों में ही एक ही जगह वैश्विक पौधों की बीमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन करती है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने ज्वार में कोनोस्पोरियम लैस स्ट्रीक बीमारी पर सोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सबसे से मान्यता प्रदान करती हुए अपने जर्नल में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया है।

बीमारी के बाद इसके प्रसार की निगरानी व उचित प्रबंधन का हो संभव - प्रोफेसर डॉ.आर. काम्बोज

विश्वविद्यालय के कुलायुक्ति डॉ. बी.आर. काम्बोज ने वैज्ञानिकों की इस खोज के लिए अभिवादन दिए। डॉ. काम्बोज ने कहा कि बदलते कृषि परिवार में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की समय पर पहचान महत्वपूर्ण हो गई है। उन्होंने वैज्ञानिकों से बीमारी के साथ प्रसार पर कड़ी निगरानी रखने को कहा। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों को रोग निवारण पर जल्द से जल्द काम शुरू करना चाहिए। इस अवसर पर आरएसजी डॉ. अजय डीगडा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. चड्ढा व मेडिकल एडवाइसर डॉ. राधिका अहो भी मौजूद थे।

सर्षे 2018 में ज्वार की फसल में दिखाई दिए थे संकेत

अनुसंधान निदेशक डॉ. नील राम शर्मा ने बताया कि पहली बार खरीफ 2018 में ज्वार में नई तरह की बीमारी दिखाई देने पर वैज्ञानिकों ने सतर्कता से काम किया। चार साल की मेहनत के बाद वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की खोज की है। वर्तमान समय में राज्य के मुख्यतः हिसार, रोहतक व महेंद्रगढ़ में यह बीमारी दृश्यमान की मिली है। रासायन विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.एस. शरारत ने कहा कि बीमारी की जल्द पहचान से कोनोस्पोरियम प्रजनन कार्यक्रम विकसित करने में मदद मिलेगी।

इन वैज्ञानिकों का रहा अग्रम योगदान

इस बीमारी के मुख्य सोधकर्म और विश्वविद्यालय के प्लांट पैथोलॉजिस्ट डॉ. विमोद कुमार शर्मा ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलन अमेरिकन कन्वेंशनलैबोरेटॉरिकल सोसाइटी, ड्यूरानो द्वारा दिनांक 2022 के दौरान कोनोस्पोरियम लैस स्ट्रीक डिजीज ऑफ ज्वार नाम पर सोध रिपोर्ट की स्वीकार किया गया है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी के सबसे पहले सोधकर्ता माने गए हैं। डॉ. शर्मा ने कहा कि कई अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और राज्यस्तरीय परीक्षणों के आधार पर हम यह साबित करने में कामयाब रहे कि एक जीवाणु कोनोस्पोरियम वेरीकोसम इस बीमारी का कारण है। यह रोग फसलों पर छोटी से छोटी लकीरें लाता-भूत रूप की धारियों के रूप में प्रकट होता है। समय के साथ, इन धारियों की संख्या में वृद्धि होती है जो बाद में नेक्रोटिक झल में परिवर्तित हो जाते हैं। एचएयू के वैज्ञानिकों डॉ. मनजीत चवला, डॉ. पूजा रायचान, डॉ. प्रमोद कुमार, डॉ. कनका लाल शर्मा, डॉ. पंकज कुमारी, डॉ. दत्तबिंदु पात शर्मा, डॉ. सत्यजित अहो और डॉ. नयवीत अहलायत ने भी इस सोधकार्य में योगदान दिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दिनदुस्मान समाचार	17.01.2023	-----	-----

हिसार: एचएयू वैज्ञानिकों ने पहली बार खोजी ज्वार की नई बीमारी

17 Jan 2023 18:11:11



अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी ने टी बीमारी को मान्यता

हिसार, 17 जनवरी (दि.प्र.)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई बीमारी व इसके कारण जीवाणु क्लेबसिलेला कैरीकोसा की खोज की है। वैश्व स्तर पर पहली बार उधार फसल में इस तरह की बीमारी का पता चला है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बीआर कल्होज के निदेशानुसार वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के कार्य शुरू कर दिए हैं व जल्द से जल्द आनुवंशिक स्तर पर प्रतिरोध प्राप्त को खोजने की कोशिश करेंगे। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वे जल्द ही इस दिशा में भी कामयाब होंगे।

पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी (एपीएस), यूएसए द्वारा प्रकाशित इनिटिड जर्नल फ्लॉट डिजीज में वैज्ञानिकों की इस नई बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में जर्नल में स्वीकार कर मान्यता दी है। अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी (एपीएस) पौधों की बीमारियों के अध्ययन के लिए सबसे पुरानी अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है जो विशेषतः पौधों की बीमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन करती है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने उधार में क्लेबसिलेला लीफ स्प्रीड बीमारी पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्था में मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया है।

विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बीआर कल्होज ने संगठन के वैज्ञानिकों की इस खोज के लिए बधाई दी। डॉ. कल्होज ने कहा कि बदलते कृषि परिवेश में विभिन्न फसलों में उभरने वाली बीमारियों की पहचान महत्वपूर्ण हो गई है। उन्होंने वैज्ञानिकों से बीमारी के आगे चलने पर कड़ी निगरानी रखने को कहा। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों को रोग नियंत्रण पर जल्द से जल्द कार्य शुरू करना चाहिए। इस अवसर पर अतिरिक्त डॉ. अनुप टोंगडा, कृषि मंत्रालय के अधिकांश डॉ. एस के पाटूला व सीकिया लक्ष्मणन डॉ. संदीप आर्य भी मौजूद थे।

अनुसंधान निदेशक डॉ. नील राम शर्मा ने बताया कि पहली बार अप्रैल-2018 में उधार में नई तरह की बीमारी दिखाई देने पर वैज्ञानिकों ने तत्परता से कार्य किया। चार साल की मेहनत के बाद वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की खोज की है। वर्तमान समय में राज्य के मुख्यतः हिसार, रोहतक व महेंद्रगढ़ में यह बीमारी देखने को मिली है। पाटल रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. एच.एम. महारण ने कहा कि बीमारी की जल्द पहचान से बीमारी का प्रजनन कार्यकाय विकसित करने में मदद मिलेगी।

इस बीमारी के मुख्य शोधकर्ता और विश्वविद्यालय के फ्लॉट पैथोलॉजिस्ट डॉ. विनोद कुमार शर्मा ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठन अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी, यूएसए द्वारा दिसंबर, 2022 के दौरान 'क्लेबसिलेला लीफ स्प्रीड डिजीज ऑफ ज्वार' पर शोध रिपोर्ट को स्वीकार किया गया है। एचएयू के वैज्ञानिकों डॉ. मनजीत बालचन, डॉ. पूजा सांगवान, डॉ. पद्मिनी कुमारी, डॉ. वज्रसं कांत शर्मा, डॉ. पवित्रा कुमारी, डॉ. दलविंदर पास सिंह, डॉ. सत्यवत आर्य और डॉ. लखवीन अहलवादी ने भी इस शोधकार्य में योगदान दिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

समस्त हरियण

दिनांक

17.01.2023

पृष्ठ संख्या

कॉलम

एचएयू वैज्ञानिकों ने पहली बार खोजी ज्वार की नई बीमारी अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी ने दी बीमारी को मान्यता

समस्त हरियाणा न्यूज
हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई बीमारी व इसके कारणक जीवामु क्लेब्सिलेला बैरिक्लोस को खोजा है। वैश्व स्तर पर पहली बार ज्वार फसल में इस तरह की बीमारी का पता चला है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. जी.आर. काम्बोज के निदेशानुसार वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के कार्य शुरू कर दिए हैं व जल्द से जल्द आनुवंशिक स्तर पर प्रतिरोध करने को खोजने की कोशिश करेंगे। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि ये जल्द ही इस दिशा में भी कामयाब होंगे।

अंतरराष्ट्रीय संस्था ने दी बीमारी को मान्यता, एचएयू के वैज्ञानिक हैं पहले शोधकर्ता

पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी (ए.पी.एस) न्यू एंग्लैण्ड-द्वारा प्रकाशित प्रतिष्ठित जर्नल प्लान्ट डिजीज में वैज्ञानिकों की इस नई बीमारी को रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में जर्नल में स्वीकार कर मान्यता दी है। अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी पौधों की बीमारियों के अध्ययन के लिए

सबसे पुराने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है जो निरंतर पौधों की बीमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन करती है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी को खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने ज्वार में क्लेब्सिलेला लीफ स्ट्रेच बीमारी पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया है।

बीमारी के बाद इसके प्रसार की निगरानी व उचित प्रबंधन का हो लक्ष्य : प्रोफेसर जी.आर. काम्बोज

विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. जी.आर. काम्बोज ने वैज्ञानिकों को इस खोज के लिए बधाई दी। प्रो. काम्बोज ने कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों को समय पर पहचान साधनपूर्ण हो गई है। उन्होंने वैज्ञानिकों से बीमारी के आगे प्रसार पर कड़ी निगरानी रखने की कहा। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों को रोग निबंधन पर जल्द से जल्द काम शुरू करना चाहिए। इस अवसर पर जोरफाटी डॉ. अनुपम चौधरी,



कृषि विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एम.के. पांडेय व मेडिकल एक्जैक्यूटिव डॉ. संतोष आर्य भी मौजूद थे।

वर्ष 2018 में ज्वार की फसल में दिखाई दिए थे लक्षण

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि पहली बार राष्ट्रीय-2019 में ज्वार में नई तरह की बीमारी दिखाई देने पर वैज्ञानिकों ने तत्पराता से काम किया। चार साल की मेहनत के बाद वैज्ञानिकों ने इस बीमारी को खोजा है। कार्यक्रम समय में राज्य के मुख्यमन्त्री किसान, रोहतास व मोहनगढ़ में यह बीमारी देखने को मिली है। पाठ्य रोग विभाग के अध्यक्ष डा. एच.एस. खट्वाण ने कहा कि बीमारी को जल्द पहचान से रोकना

प्रजनन कार्यक्रम विकसित करने में मदद मिलेगी।

इन वैज्ञानिकों का रहा अग्रम योगदान

इस बीमारी के मुख्य शोधकर्ता और विश्वविद्यालय के प्लान्ट पैथोलॉजिस्ट डॉ. निनीत कुमार मलिक ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संसल अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी, न्यूएंग्लैण्ड दिसेंबर, 2022 के दौरान 'क्लेब्सिलेला लीफ स्ट्रेच डिजीज लीफ स्ट्रेचिंग' पर शोध रिपोर्ट को स्वीकार किया गया है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी के सबसे पहले शोधकर्ता माने गए हैं। डॉ. मलिक ने कहा कि कई

स्वास्थ्यक, जैव रासायनिक, आणविक और रोगजनकता परीक्षणों के आधार पर हम यह मानित करने में कामयाब रहे कि एक जीवामु क्लेब्सिलेला बैरिक्लोस इस बीमारी का कारण है। यह रोग पत्तियों पर छेदी से लेकर लंबी स्थल-भूरे रंग की धारियों के रूप में प्रकट होता है। समय के साथ, इन धारियों की संख्या में वृद्धि होती है जो बाद में वैज्ञानिक क्षेत्र में परिचित हो जाते हैं। एचएयू के वैज्ञानिकों डॉ. मनजीत घग्घस, डॉ. पूजा रांगघान, डॉ. चम्पी कुमारी, डॉ. बहरंग लाल शर्मा, डॉ. पवित्रा कुमारी, डॉ. दलीपेंद्र रात सिंह, डॉ. सत्यजान आर्य और डॉ. नमजीत अहलवात ने भी इस शोधकार्य में योगदान दिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

सिटी पल्स

17.01.2023

एचएयू वैज्ञानिकों ने पहली बार खोजी ज्वार की नई बीमारी और इसके कारक

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई बीमारी व इसके कारक जीवाणु क्लेबसिएला वेरिकोला की खोज की है। वैश्विक स्तर पर पहली बार ज्वार फसल में इस तरह की बीमारी का पता चला है। वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के कार्य शुरू कर दिए हैं व जल्द से जल्द आनुवंशिक स्तर पर प्रतिरोध स्व्रोत को खोजने की कोशिश करेंगे। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वे जल्द ही इस दिशा में भी कामयाब होंगे।

एचएयू के वैज्ञानिक हैं पहले शोधकर्ता : पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी (ए.पी.एस.), यू.एस.ए. द्वारा प्रकाशित प्रतिष्ठित जर्नल प्लांट डिजीज में वैज्ञानिकों की इस नई बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में जर्नल में स्वीकार कर मान्यता दी है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन



कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ज्वार की नई बीमारी की खोज करने वाले वैज्ञानिकों के साथ।

वैज्ञानिकों ने ज्वार में क्लेबसिएला लीफ स्ट्रीक बीमारी पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया है। डॉ. काम्बोज ने वैज्ञानिकों की इस खोज के लिए बधाई दी। प्रो. काम्बोज ने कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की समय पर पहचान महत्वपूर्ण हो गई है। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि पहली बार खरीफ-2018 में ज्वार में नई तरह की बीमारी दिखाई देने पर वैज्ञानिकों

ने तत्परता से काम किया। चार साल की मेहनत के बाद वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की खोज की है। वर्तमान समय में राज्य के मुख्यतः हिसार, रोहतक व महेन्द्रगढ़ में यह बीमारी देखने को मिली है। पादप रोग विभाग के अध्यक्ष डा. एच.एस. सहारण ने कहा कि बीमारी की जल्द पहचान से योजनाबद्ध प्रजनन कार्यक्रम विकसित करने में मदद मिलेगी। इन वैज्ञानिकों का रहा अहम योगदान: इस बीमारी के मुख्य शोधकर्ता और विश्वविद्यालय के प्लांट पैथोलॉजिस्ट डॉ. विनोद कुमार मलिक ने कहा कि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के

वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी के सबसे पहले शोधकर्ता माने गए हैं। डॉ. मलिक ने कहा कि कई रूपात्मक, जैव रासायनिक, आणविक और रोगजनकता परीक्षणों के आधार पर हम यह साबित करने में कामयाब रहे कि एक जीवाणु क्लेबसिएला वेरिकोला इस बीमारी का कारक है। एचएयू के वैज्ञानिकों डॉ. मनजीत घणघस, डॉ. पूजा सांगवान, डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. बजरंग लाल शर्मा, डॉ. पवित्रा कुमारी, डॉ. दलविंदर पाल सिंह, डॉ. सत्यवान आर्य और डॉ. नवजीत अहलावत ने शोधकार्य में योगदान दिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उत्तम हिन्दू	17.01.2023	-----	-----

एचएयू वैज्ञानिकों ने पहली बार खोजी ज्वार की नई बीमारी

अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसायटी ने दी बीमारी को मान्यता

उत्तम हिन्दू न्यूज नेटवर्क
हिसार/सुखविन्दर कौर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई बीमारी व इसके कारक जीवाणु बलेबसिएला वीरीकोला की खोज की है। वैश्विक स्तर पर पहली बार ज्वार फसल में इस तरह की बीमारी का पता चला है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के निर्देशानुसार वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के कार्य शुरू कर दिए हैं व जल्द से जल्द अनुवांशिक स्तर पर प्रतिरोध स्रोत को खोजने की कोशिश करेंगे। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वे जल्द ही इस दिशा में भी कामयाब होंगे।

अंतरराष्ट्रीय संस्था ने दी बीमारी को मान्यता, एचएयू के वैज्ञानिक हैं पहले शोधकर्ता
पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अमेरिकन



कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज नई बीमारी को खोज करने वाले वैज्ञानिकों के साथ।

फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी (ए.पी.एस.), यू.एस.ए. द्वारा प्रकाशित प्रतिष्ठित जर्नल प्लांट डिजीज में वैज्ञानिकों की इस नई बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में जर्नल में स्वीकार कर मान्यता दी है। अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी (ए.पी.एस.) पौधों की बीमारियों के अध्ययन के लिए सबसे पुराने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है जो विशेषतः पौधों की बीमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन करती है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दुनिया

में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने ज्वार में बलेबसिएला वीरीकोला नाम की बीमारी पर शोध रिपोर्ट लिखी है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्रदान करते हुए जर्नल में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बी.आर. काम्बोज ने वैज्ञानिकों की इस खोज के लिए बधाई दी। प्रो. काम्बोज ने कहा कि बदलते कृषि पर्यावरण में विभिन्न फसलों में बीमारियों की समय पर पहचान आवश्यक हो गई है। उन्होंने

वैज्ञानिकों से बीमारी के आगे प्रसार पर कड़ी निगरानी रखने को कहा। इस बीमारी के मुख्य शोधकर्ता और विश्वविद्यालय के प्लांट पैथोलॉजिस्ट डॉ. विनोद कुमार मलिक ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठन अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी, यूएसए द्वारा दिसंबर, 2022 के दौरान 'बलेबसिएला लीफ स्ट्रीक डिजीज ऑफ सोरगम' पर शोध रिपोर्ट को स्वीकार किया गया है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी के सबसे पहले शोधकर्ता माने गए हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वावेद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरिभूमि	18.01.23	9	2 ^{रा}

एचएयू वैज्ञानिकों ने पहली बार खोजी ज्वार की नई बीमारी

हरिभूमि न्यूज 11 दिसंबर

अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी ने दी बीमारी को मान्यता

इजरायल रस सहयोग

मुख्य संशोधक एचएयू के वैज्ञानिकों डॉ. क्लेबिसिएला वेरीकोला डॉ. पूजा संख्यवाले डॉ. फर्नी कुमार, डॉ. कनका लखत शर्मा, डॉ. पवित्र कुमारी, डॉ. कपिलेश पाल सिंह, डॉ. अरुणदास अर्ब और डॉ. कनका अलुखता ने भी इस खोजमें योगदान दिया।



किंगडॉम व उचित प्रबंधन का हो संभव

विभिन्न कृषि क्षेत्रों में वैज्ञानिकों को बर्बाद देते हुए कृषि क्षेत्रों में विभिन्न फसलों में ज्वार की खेती को संभव बनाने में मदद मिलेगी। मुख्य शोधकर्ता और विश्वविद्यालय के फ्लॉट पैथोलॉजिस्ट डॉ. विनोद कुमार मलिक ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठन अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी, यूएसए द्वारा दिसंबर, 2022 के दौरान क्लेबिसिएला लीफ स्ट्रीक डिजीज ऑफ ज्वार पर शोध रिपोर्ट को स्वीकार किया गया है। हकूवि के वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी के सबसे पहले शोधकर्ता माने गए हैं। कई रूपात्मक, जैव रासायनिक, आणविक व रोगजनकता परीक्षणों के आधार पर हम यह साबित करने में कामयाब रहे कि एक जीवाणु क्लेबिसिएला वेरीकोला इस बीमारी का कारक है। यह रोग पत्तियों पर छोटी से लेकर लंबी लाल-भूरे रंग की धारियों में प्रकट होता है। समय के साथ, इन धारियों की संख्या में वृद्धि होती है।

वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने ज्वार में क्लेबिसिएला लीफ स्ट्रीक बीमारी पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में प्रकाशन के लिए स्वीकार

किया है।

वर्ष 2018 में दिखाई दिए थे लक्षण

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि पहली बार खरीफ-2018 में ज्वार में नई तरह की

बीमारी दिखाई देने पर वैज्ञानिकों ने तत्परता से काम किया। चार साल की मेहनत के बाद वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की खोज की है। वर्तमान समय में राज्य के मुख्यतः हिसार, रोहतक व गढ़ना में यह बीमारी देखने की मिली है। पाद रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ.

एच.एस. सहारण ने कहा कि बीमारी की जल्द पहचान से योजनाबद्ध प्रजनन कार्यक्रम विकसित करने में मदद मिलेगी। मुख्य शोधकर्ता और विश्वविद्यालय के फ्लॉट पैथोलॉजिस्ट डॉ. विनोद कुमार मलिक ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठन अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी, यूएसए द्वारा दिसंबर, 2022 के दौरान क्लेबिसिएला लीफ स्ट्रीक डिजीज ऑफ ज्वार पर शोध रिपोर्ट को स्वीकार किया गया है। हकूवि के वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी के सबसे पहले शोधकर्ता माने गए हैं। कई रूपात्मक, जैव रासायनिक, आणविक व रोगजनकता परीक्षणों के आधार पर हम यह साबित करने में कामयाब रहे कि एक जीवाणु क्लेबिसिएला वेरीकोला इस बीमारी का कारक है। यह रोग पत्तियों पर छोटी से लेकर लंबी लाल-भूरे रंग की धारियों में प्रकट होता है। समय के साथ, इन धारियों की संख्या में वृद्धि होती है।